राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

दुर्विचारा यथा न स्युस्, तथा सत्सेवनं मिलेत् ।
तत्प्राप्यते कृतो यत्नो, निष्फलः स्यात् कदापि न ॥२१२॥

दुर्विचार जिस प्रकार उत्पन्न हों वैसा खान-पान आदि में सत्सेवन मिलना चाहिये। उस सत्सेवन की प्राप्ति के लिये किया गया प्रयत्न कभी निष्फल नहीं होता हैं ।

Such good food and drinks should be taken/consumed that will not create bad behaviour. The efforts to achieve that will never be without fruits.

दुष्कृतैर्मिलते दुःखं, सुकृतैः सुखमाप्यते ।
तस्मात् तदेव कर्तव्यं, सुखं येन मिलेत् सदा ॥२१३॥

बुरे कार्यों से दुःख ही मिलता है और अच्छे कार्यों से सुख पाया जाता है । अतः वहीं काम करना चाहिये जिससे सदा सुख मिले ।

Suffering follows the bad deeds and happiness the good ones. Therefore, those deeds should be done that bring permanent happiness.

दुष्टाँश्चेत् सर्वकारो न, नियन्त्रयति कालतः ।
तर्हि रोगाग्निवद् वृद्धा, दुःशम्यास्ते भवन्ति वै ॥२१४॥

यदि सरकार दुष्टों को समय रहते नियन्त्रित नहीं करती है तो रोग और अग्नि के समान बढ़े हुए वे दुष्ट निश्चित रूप से दुःशमनीय बन जाते हैं ।

If the government does not control bad people on time, they will surely grow, and like disease and fire become hostile.

दूषितामपि यो रम्यां, करोति रचनां बुधः ।
किं स सम्पादको नैव , प्रशस्योऽस्ति पुनः पुनः ? ॥२१५॥

जो दूषित रचनाओं को भी रमणीय बना देता है, क्या वह विद्वान् सम्पादक पुनः पुनः प्रशंसनीय नहीं होता है ?

Isn't that educated editor worthy of respect who makes corrupted compositions enjoyable?

देवासुर–समूहोऽपि, यदग्रे निष्फलः सदा ।
सर्वान्तकं महाकालं, तं नमामि मुहुर्मुहुः॥२१६॥

देव और दानवों का समूह भी जिसके आगे सदा निष्फल रहता है, ऐसे उस सर्वान्तकारी महाकाल को मैं वारं वार नमन करता हूँ ।

Again, and again I give my respect to all-powerful Mahakal (death, time) in front of whom all gods and demons are powerless/unsuccessful.

देवो यं रक्षितुं वाञ्छेद्, वाञ्छेद् हन्तुं च यं स्वयम् ।
तथा करोति तद् –बुद्धिं, तस्माद् वन्द्यः सदैव सः ॥२१७॥

देवता जिसकी रक्षा करना चाहता है और जिसको स्वयं मारना चाहता है, वह उसकी बुद्धि को वैसी ही बना देता है । अतः वह देवता सदा ही वन्दनीय है ।

Whom ever the god/deity wants to protect or destroys, directs that person's mind in that way. Therefore, that deity is always worthy of respect.

देशद्रोहस्य लोपो न, राष्ट्रभक्तिं विना भवेत् ।
यथेयं राष्ट्रभक्तिः स्यात्, तथोपायो विधीयताम् ॥२१८॥

राष्ट्रभक्ति के बिना देशद्रोह का लोप नहीं हो सकता । जिस प्रकार यह राष्ट्रभक्ति उत्पन्न हो, उस प्रकार का उपाय करना चाहिये ।

Without devotion to the country, treason cannot disappear. Such efforts should be made which will awaken patriotism.